

युवाओं में नेतृत्व क्षमता के विकास में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका

डॉ. रवत सिंह, शोध निर्देशक, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर
अनिल कुमार, शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

युवा वर्ग प्रत्येक राष्ट्र का आधार स्तंभ और राष्ट्रीय विकास का कर्णधार होता है। इसलिए यह आवश्यक होता है कि राष्ट्र के सर्वाधिक उपयोगी मानवीय संसाधन के रूप में युवा शक्ति का संतुलित विकास और उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो। इस हेतु शिक्षाशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों का दायित्व बनता है कि वे शिक्षा और उचित मार्गदर्शन और निर्देशन के द्वारा युवाओं का समुचित संवेगात्मक विकास करें क्यों कि संवेगात्मक विकास मानव अभिवृद्धि और व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। समुचित सांवेगिक विकास से ही विद्यार्थियों की संवेगात्मक या भावनात्मक बुद्धि का विकास संभव है जो युवाओं की निर्णय शक्ति और नेतृत्व क्षमता को विकसित करता है और सुदृढ़ बनाता है। नेतृत्व में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता हमारी अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने तथा दूसरों की भावनाओं को समझने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता नेतृत्व क्षमता के लिए आवश्यक कई कौशलों में से एक मौलिक कौशल है। जो व्यक्ति को उचित निर्णय लेने और दूसरों को समझने में सहायता प्रदान करती है। भावनात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक है। यह अपने और दूसरों के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने-आप को अभिप्रेरित करके अपने और अपने संबंधों में संवेग को प्रबंधित करने की क्षमता है।

मुख्य शब्दावली :- नेतृत्व, क्षमता, भावनात्मक, बुद्धिमत्ता, भूमिका।

➤ शोध का उद्देश्य :-

- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य युवाओं की नेतृत्व क्षमता के विकास का आकलन करना है।
- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य नेतृत्व क्षमता पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका अध्ययन करना है।

➤ प्रस्तावना (Introduction) :-

युवा विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक युवा व्यक्ति को किशोरावस्था और व्यस्कता की चुनौतियों का सामना करने और अपनी पूरी क्षमता को प्राप्त करने के लिए तैयार करती है। युवा विकास को उन गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से बढ़ावा दिया जाता है जो युवाओं को सामाजिक, नैतिक, भावनात्मक, शारीरिक और संज्ञानात्मक दक्षता विकसित करने में मदद करते हैं। युवा नेतृत्व युवा विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है जो युवाओं को अपनी शक्तियों और कमजारियों का विश्लेषण करने की क्षमता, व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्य निर्धारित करना, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, अभिप्रेरणा और उन्हें पुरा करने की क्षमता, सामाजिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने की कार्य क्षमता सहित और कार्रवाई के दौरान दूसरों को मार्गदर्शन या निर्देशित करने, दूसरों की राय और व्यवहार को प्रभावित करने और एक रोल मॉडल के रूप में कार्य करने की क्षमता का विकास करने से है। युवाओं में इस प्रकार की नेतृत्व क्षमता के विकास के लिए उनका भावनात्मक रूप से स्वस्थ रहना आवश्यक है ताकि उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संतुलित विकास हो सके और वे इसका उचित दिशा में प्रयोग कर सकें। भारत जैसे विकासशील देश में संवेगात्मक बुद्धि से युक्त युवा वर्ग का होना बहुत आवश्यक है। वर्तमान समय की आर्थिक चुनौतियों, और संसाधनों की कमी का तनाव प्रत्येक व्यक्ति पर स्पष्ट दिखाई देता है। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की निरंतर बढ़ती आवश्यकताएँ, अपेक्षाएँ और उच्च जीवन स्तर की लालसा परस्पर विरोधी स्थितियाँ उत्पन्न कर देते हैं। इन जटिल परिस्थितियों में वही व्यक्ति सफल हो पाता है, जिसमें भावनाओं के प्रबंधन की क्षमता अधिक होती है। स्वयं की भावनाओं पर नियंत्रण रखने और व्यवहार में लचीलापन रखने वाले व्यक्ति ही इन समस्याओं का समाधान खोजने में सफल हो पाते हैं। इसके लिए भावनात्मक बुद्धि की आवश्यकता होती है।

➤ **नेतृत्व :-** प्रत्येक समाज में नेतृत्व का अत्यंत महत्व होता है, क्यों कि यह नेतृत्व ही होता है जो समाज के विविध क्षेत्रों यथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि में एक नवीन परिवर्तन लाता है। यही कारण है कि समाज के प्रारंभिक विकास से ही नेतृत्व के अध्ययन में रुचि प्रदर्शित की जाती रही है। अतः समाज के पास नेतृत्व के संबंध में बहुत सा संचित अनुभव है। भारत में भी आचार्य चाणक्य



के अर्थशास्त्र में एक राजा में नेतृत्व के कौन-कौन से गुण होने चाहिए, इसका विस्तार से वर्णन किया गया है।

संस्कृत भाषा में नेता शब्द "रीयते यः अनने" अर्थात् जो दूसरों को ले जाने की क्षमता रखे, अर्थ का प्रकट करता है। इसका अभिप्रायः यही है कि जो व्यक्ति स्वयं आदर्श रूप होकर अन्य व्यक्तियों को आदर्श की ओर अग्रसर करता है, वही नेता हो सकता है। अंग्रेजी भाषा में नेतृत्व शब्द **Leadership** का पर्याय है। जो **Leader** शब्द से बना है। जिसका अर्थ है "नायक", "मार्ग प्रदर्शक", "अगुआ" तथा अग्रसर करने वाला। इस प्रकार जो व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को मार्ग दिखाने अथवा अगुवा बनकर आदर्श व्यवहार करने की क्षमता रखता है वही वास्तविक अर्थों में नेता होता है।

● "नेतृत्व एक प्रकार का व्यवहार है जो नेता में ही पाया जाता है। यह व्यवहार अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को अधिकतर प्रभावित करता है एवं नेता उनके व्यवहार से इतना अधिक प्रभावित नहीं होता।"

—ला पियरे तथा फ्रैंसवर्थ

● "किसी नेता में बुद्धि, कल्पना, धैर्य तथा भावात्मक दृढता के गुण होते हैं। ये उन अनेक वैयक्तिक गुणों में से हैं, जो किसी व्यक्ति को नेतृत्व प्रदान करने के योग्य बनाते हैं।"

—मायर्स

➤ **भावनात्मक बुद्धिमत्ता :-**

भावनात्मक बुद्धिमत्ता या संवेगात्मक बुद्धि का संप्रत्यय बुद्धि के संप्रत्यय को उसके बौद्धिक क्षेत्र से अधिक विस्तार देता है और संवेगों को भी बुद्धि के अंतर्गत सम्मिलित करता है। संवेगात्मक बुद्धि का संप्रत्यय सामान्य बुद्धि की भारतीय परंपरा की अवधारणा से निर्मित हुआ है। सांवेगिक बुद्धि या भावनात्मक स्वयं की एवं दूसरों की भावनाओं अथवा संवेगों को समझने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने की योग्यता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को सामाजिक बुद्धिमत्ता लोगों को समझने की योग्यता के रूप में भी देखा जाता है। संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य मुख्य रूप से व्यक्ति के सांवेगिक पक्ष से संबंधित क्षमताओं और शीलगुणों के समुच्चय से है। अपनी भावनाओं व संवेगों को समझकर उनका उचित ढंग से प्रबंधन करना ही भावनात्मक या संवेगात्मक बुद्धि है। जिन व्यक्तियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक होती है, वे बदलते वातावरण के साथ शिघ्र समायोजित हो जाते हैं इसलिए उनकी सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। सामान्यतः लोग यह समझते हैं कि अपनी बुद्धि लब्धि (**I. Q.**) के कारण ही कोई व्यक्ति अपने जीवन में सफलताएँ एवं उपलब्धियाँ प्राप्त करता है। किंतु आधुनिक शोध कार्यों से यह स्पष्ट हो चुका है कि व्यक्ति अपने जीवन में जो भी सफलताएँ अर्जित करता है, उसका 20% ही बुद्धि लब्धि (**I. Q.**) के कारण होता है और 80% संवेगात्मक लब्धि (**E. Q.**) के कारण होता है। बुद्धि से संज्ञानात्मक योग्यता का बोध होता है। काफी समय तक यह माना जाता रहा कि संज्ञान तथा संवेग परस्पर विरोधी मनः स्थितियाँ हैं। किंतु जीवन में सफल समायोजन करने में संज्ञान तथा संवेग दोनों की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम संवेगात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग अमेरिकी मनोवैज्ञानिक पीटर सालवे और जॉन मेयर ने किया। किंतु संवेगात्मक बुद्धि पद को चर्चित करने का श्रेय डेनियल गोलमैन का है जिन्होंने अपनी बहुचर्चित पुस्तक "**Emotional intelligence : why it can matter more than IQ**" में संवेगात्मक बुद्धि की वैज्ञानिक और सैद्धान्तिक व्याख्या की। गोलमैन के अनुसार सांवेगिक बुद्धि के कारण व्यक्ति अपने भावों एवं संवेगों को पहचानता एवं समझता है, साथ ही वह दूसरों के भावों और संवेगों को भी भलि-भाँति समझता है।

➤ **परिभाषाएँ :-**

"संवेगात्मक बुद्धि एक योग्यता है, जिससे हम अपने स्वयं तथा अन्य व्यक्तियों की भावनाओं एवं संवेगों का अनुवीक्षण करते हैं। इन सूचनाओं के आधार पर उनमें अन्तर करते हैं और अपने कार्यों एवं चिंतन को निर्देशित करते हैं।" — पीटर सालवे तथा जॉन मायर्स

"संवेगात्मक बुद्धि अनेक एवं दूसरे के भावों को पहचानने की क्षमता है तथा अपने आपको अभिप्रेरित करके एवं अपने एवं दूसरों के साथ संबंधों में संवेग को प्रबंधित करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि द्वारा उन क्षमताओं का वर्णन होता है जो शैक्षिक वृद्धि या बुद्धि लब्धि द्वारा मापे जाने वाले पूर्णतः संज्ञानात्मक क्षमताओं से भिन्न परन्तु उसके पूरक होते हैं।" — डेनियल गोलमैन

“संवेगात्मक बुद्धि द्वारा वह क्षमता परिवर्तित होती है जिसके माध्यम से दिन-प्रतिदिन के पर्यावरणिय चुनौतियों के साथ निपटा जाता है और जो व्यक्ति की जिंदगी में जिसमें पेशेवर तथा व्यक्तिगत व्यवसाय भी सम्मिलित है, सफलता प्राप्त करने में मदद करता है।” – बार-ऑन

➤ भावनात्मक बुद्धि की आवश्यकता :-

- व्यक्ति की सफलता में **IQ** केवल 10 से 20 प्रतिशत योगदान देती है शेष 80 से 90 प्रतिशत योगदान हमारी **EQ** (संवेगात्मक बुद्धि) का होता है।
- भावनात्मक बुद्धि कार्यस्थल पर सफल होने के लिए अत्यंत आवश्यक है क्यों कि अधिक **IQ** की वजह से हमें कार्य तो मिल जाता है पर उस कार्य में उन्नति हम **EQ** के द्वारा ही कर सकते हैं।
- तनाव, अवसाद की समस्या आधुनिक समाज में निरंतर बढ़ती जा रही है **EQ** हमें इससे बचा सकता है।
- सांवेगिक समस्याएँ जैसे – क्रोध, चिंता, नशा, आक्रमकता की समस्या बढ़ती ही जा रही है उचित सांवेगिक बुद्धि की क्षमता द्वारा इन संवेगों को नियंत्रित किया जा सकता है।
- **EQ** के द्वारा हम अपने संबंधों को बेहतर बना सकते हैं।
- **EQ** के द्वारा हम स्वयं को बेहतर तरीके से समझकर अपने निर्णयों और अभिव्यक्ति को बेहतर बना सकते हैं।

➤ भावनात्मक बुद्धि की उपयोगिता :-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता लक्ष्यों को पुरा करने के लिए एक बेहतरीन उपकरण है, लेकिन इसका उपयोग दूसरों को प्रभावित करने के लिए भी किया जा सकता है।

- जो लोग अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महारत हासिल करते हैं, वे बेहतर जोड़तोड़ कर सकते हैं। जब आप अपनी भावनाओं को तराशते हैं, तो आप अपनी सच्ची भावनाओं को छिपा सकते हैं।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता के द्वारा एक नेता अपने अनुयायियों का सर्वोत्तम तरिके से नेतृत्व कर सकता है।
- व्यक्ति भावनात्मक बुद्धिमत्ता के द्वारा परिस्थितियों के साथ शिघ्र समायोजित होकर परिस्थितियों के अनुकूल निर्णय ले सकता है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है न कि बुद्धि लब्धि के द्वारा।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं और तर्क दोनों का उपयोग करके समस्याओं का समाधान करने में मदद करती है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता दूसरों के लिए करुणा, देखभाल और सहानुभूति व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता संचार और दूसरों के साथ बातचीत में सुधार करती है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता कठिन परिस्थितियों में लोगों को सोच-समझकर और शांति से उतर देने में भी मदद करती है।

➤ नेतृत्व क्षमता और भावात्मक बुद्धिमत्ता :-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता को जीवन और कैरियर की सफलता का एक महत्वपूर्ण संकेतक माना गया है, विशेष रूप से नेतृत्व में सफलता। **EQ** सामाजिक बुद्धिमत्ता के एक रूप को संदर्भित करता है जिसमें अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, उनके मध्य अंतर करने और इस जानकारी का उपयोग किसी की सोच और कार्यों को निर्देशित करने की क्षमता शामिल है। डेनियल गोलमैन के अनुसार भावात्मक बुद्धिमत्ता चार विशिष्ट लेकिन पूरक घटकों से बनी है –

1. **आत्म जागरूकता** – स्वयं की भावनाओं की पहचान।
2. **सामाजिक जागरूकता** – दूसरे की भावनाओं को पहचानना।
3. **स्व प्रबंधन** – किसी की भावनाओं को प्रबंधित करने की क्षमता।

4. सामाजिक कौशल – दूसरों की भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता।

ये चार घटक इस बात की अच्छी रूपरेखा बनाते हैं कि एक नेता को वास्तव में क्या चाहिए, आत्म जागरूकता होना, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और प्रबंधित करने में सक्षम होना और दूसरों की भावनाओं को प्रभावित और प्रबंधित करना, जिसका वह नेतृत्व कर रहा है। भावात्मक बुद्धिमत्ता और नेतृत्व की बारिकियों में उतरने के लिए भावात्मक बुद्धिमत्ता के पाँच तत्व हैं जो एक नेता की प्रभावशीलता में योगदान करते हैं –

1. सामूहिक लक्ष्यों और उद्देश्यों का विकास।
2. दूसरों में कार्य गतिविधियों के महत्व की सराहना पैदा करना।
3. उत्साह, आत्मविश्वास, आशावाद, सहयोग और विश्वास पैदा करना और उसे बनाए रखना।
4. निर्णय लेने और परिवर्तन में लचीलेपन को प्रोत्साहित करना।
5. किसी संगठन के लिए एक सार्थक पहचान स्थापित करना और बनाए रखना।

दूसरे शब्दों में एक नेता जो ऐसे लक्ष्य विकसित करने में सक्षम है जिनके बारे में लोग उत्साहित हैं, दूसरों को अपने काम के बारे में उत्साहित करते हैं, कार्यस्थल में आत्मविश्वास और सकारात्मकता पैदा करते हैं, लचीलापन और प्रवाह के साथ चलते हैं, एक रवैया लागू करते हैं, और एक सार्थक संगठनात्मक माहौल विकसित करते हैं जो एक सफल नेता की पहचान होती है। सबसे प्रभावी नेता एक महत्वपूर्ण तरीके से एक जैसे होते हैं उन सभी के पास उच्च स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है। ऐसा नहीं है कि बुद्धि लब्धि और तकनीकी कौशल अप्रासंगिक है, ये मायने रखते हैं किंतु वे कार्यकारी पदों के लिए प्रवेश स्तर की आवश्यकताएँ हैं। सफल नेतृत्व हेतु भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उच्च स्तरीय होना आवश्यक है।

➤ नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु युवाओं में भावात्मक बुद्धि का विकास :-

उचित मार्गदर्शन, निर्देशन और परामर्श के द्वारा विद्यार्थियों और युवाओं में नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु भावात्मक बुद्धि का विकास किया जा सकता है। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे युवाओं को भावात्मक बुद्धिमत्ता सीखायी जा सकती है।

- विद्यार्थियों को आत्म चिंतन और आत्म-जागरूकता का अभ्यास कराया जाए।
- दूसरों की प्रतिक्रिया लेने और रचनात्मक आलोचना के लिए विद्यार्थियों को तैयार किया जाए।
- भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद के लिए गहरी श्वास लेने, ध्यान, योग जैसी विश्राम तकनीकों को सीखाया जाए और उनका अभ्यास कराया जाए।
- बालकों को ऐसी गतिविधियों में शामिल किया जाए जो सहानुभूति को बढ़ावा दें, जैसे स्वयं सेवा समूह के कार्य या अन्य समाज सेवा से जुड़े कार्यों और गतिविधियों में भाग लेना।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता, संचार और संघर्ष समाधान जैसे संबंधित कौशल पर कार्यशालाओं या प्रशिक्षण सत्रों में भाग ले।

➤ निष्कर्ष :-

भावात्मक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण प्रत्यय है, क्यों कि इसका संबंध मनुष्य के भावी जीवन की समृद्धि, सफलता और संपन्नता से है। इसलिए विद्यार्थियों और युवा वर्ग में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास किया जाना चाहिए। व्यक्ति का अपने जीवन में सफल होने के लिए उच्च बुद्धि लब्धि तथा विद्यालयी परीक्षाओं में अच्छा निष्पादन ही पर्याप्त नहीं है। आप अनेक ऐसे व्यक्ति पायेंगे जो उच्च शैक्षिक प्रतिभा वाले तो हैं परंतु अपने जीवन में सफल नहीं हो पाते। परिवार में तथा कार्य स्थान पर उनको अनेक समस्याएँ रहती हैं। वे अच्छा अंतर्व्यक्ति संबंध नहीं बना पाते ऐसे व्यक्तियों में कौनसी कमी होती है? कुछ मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि उनकी समस्याएँ उनकी भावात्मक बुद्धि की कमी के कारण उत्पन्न होती हैं। इसलिए व्यक्ति में भावात्मक बुद्धिमत्ता का एक निश्चित स्तर होना आवश्यक है। राष्ट्र और समाज के लिए उत्तम मानवीय संसाधन का विकास करने के लिए आवश्यक है कि विद्यालय स्तर पर ही शिक्षकों या मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षकों द्वारा बालकों में भावात्मक बुद्धि का विकास करने का अभ्यास कराया जाए और उन्हें प्रशिक्षण प्रदान किया जाए ताकि वे अपने लक्ष्यों का निर्धारण कर उन्हें प्राप्त कर



सके और नेतृत्व क्षमता का विकास कर भावी पीढी का मार्गदर्शन कर सकें। साथ ही वे उत्तम नागरिक बनकर राष्ट्र व समाज की उन्नति में उत्तरोत्तर अपना योगदान दे सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. सिंह, जे. डी., "शिक्षा मनोविज्ञान" प्रकाशक – आपणी पोथी, सीकर रोड, नवलगढ।
2. डॉ. जैन, कल्पना, डॉ. लवानिया, शिप्रा, "संज्ञानात्मक मनोविज्ञान : मौलिक प्रक्रियाएँ" प्रकाशक – वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।
3. भटनागर, सुरेश, डॉ. गुप्ता, महिमा, डॉ. सिंह, के. पी., "शिक्षा मनोविज्ञान" प्रकाशक – आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. प्रो. ओड, एल, के., "शैक्षिक प्रशासन" प्रकाशक – राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
5. डॉ. शर्मा, आर. ए., "शिक्षा प्रशासन एवं प्रबंधन" प्रकाशक – आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. प्रो. चौहान, विजयलक्ष्मी, डॉ. शर्मा, तरुण कुमार, "मनोविज्ञान" प्रकाशक – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।
7. सिंह, दलीप "कार्यस्थल पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता" प्रकाशक – सेज पब्लिकेशन इण्डिया।
8. डॉ. कुमार कृष्ण, "शिक्षा मनोविज्ञान" प्रकाशक – बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
9. डॉ. पाण्डेय, कामताप्रसाद, "नवीन शिक्षा मनोविज्ञान" प्रकाशक – विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
10. अग्रवाल, सुधा, "शिक्षा मनोविज्ञान" प्रकाशक – संजय प्रकाशन।

• NASET www.nasetalliance.org

• www.positivepsychology.com

• www.hi.m.wikipedia.org

